Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 5
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

प्राचीन भारत में उच्च शिक्षा के केन्द्र के रूप में तक्षशिला विश्वविद्यालय

संतोष कुमार पाण्डेय
शोध छात्र (जे0आर0एफ0), तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0)
सम्बद्ध : वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0)

Article Info
Publication Issue :
September-October-2023
Volume 6, Issue 5
Page Number : 16-20
Article History
Received : 01 Sep 2023
Published : 20 Sep 2023

सारांश :–
प्राचीन भारतीय संस्कृति का स्वर्णिम पक्ष उसकी शिक्षण प्रणाली ही रही है। जिसके कारण भारतीय संस्कृति को जगत शिरोमणि की उपाधि से विभूषित किया गया। प्राचीन काल में भारत शिक्षा प्रणाली एक ऐसा प्रभावशाली तंत्र था जिसने तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा शैक्षणिक व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से चलाने के साथ–साथ उन्हें सकारात्मक गति भी प्रदान की। प्राचीन काल में भारतीय शिक्षण प्रणाली को स्थापित तथा विकसित करने में तक्षशिला विश्वविद्यालय की मुख्य भूमिका रही है। इस शोध पत्र में तक्षशिला विवविद्यालय की शिक्षण प्रणाली का वर्णन किया गया है। प्राचीन काल में तक्षशिला विश्वविद्यालय न सिर्फ भारत बल्कि विदेशों में भी उच्च शिक्षा के केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध था।[1] कई प्रसिद्ध आचार्य यहाँ पर निवास करते थे, जिनके ज्ञान, प्रसिद्धि से आकर्षित होकर दूर–दूर से छात्र शिक्षा ग्रहण करने यहाँ पर आते थे।[2] यह विश्वविद्यालय त्रयी (तीनों वेद), दण्डनीति, वार्ता, दर्शनशास्त्र, शिल्पकला, आयुर्वेद, धनुर्विद्या जैसी विधाओं के अध्ययन–अध्यापन के लिए समस्त विश्व में प्रसिद्ध था।[3]

तक्षशिला, विश्वविद्यालय, प्राचीन भारत में महाभारत काल से ही शिक्षा का प्रधान केन्द्र था। इसी विश्वविद्यालय में धौम्य ऋषि के शिष्य उपमन्यु तथा उनके मित्र आरूणि ने भी शिक्षा प्राप्त की थी। ऐतरेय ब्राह्मण में गान्धार के एक शासक अग्निजीत का वर्णन मिलता है, जिसने 7वीं शताब्दी ई0 में यहाँ पर शासन किया।[4] शतपथ ब्राह्मण में अग्निजीत के साथ–साथ उनके पुत्र स्वर्जित का भी वर्णन मिलता है।[5] बौद्ध साहित्य में गान्धार के शासक के रूप में नग्रजीत का वर्णन मिलता है। विद्वानों का मानना है कि अग्निजीत, उनके पुत्र स्वर्जित तथा नग्रजीत ने यहीं पर रहकर अध्ययन कार्य पूर्ण किया।[6] यहाँ पर पांचाल, राजगृह काशी, अवन्ति, मिथिला से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते थे।[7] अष्टाध्यायी के लेखक तथा प्रसिद्ध व्याकरणाचार्य पाणिनी ने यहीं से शिक्षा प्राप्त की। बिम्बिसार के राजवैद्य जीवक जो कि एक प्रसिद्ध चिकित्सक थे, ने यहीं पर रहकर 7 वर्ष तक अध्ययन किया।[8] कोशल नरेश प्रसेनजित, आचार्य चाणक्य, लिच्छवि महामलि, मल्ल सरदार बन्धुल, पंचतंत्र के लेखक विष्णु शर्मा ने यहीं पर रहकर शिक्षा–दीक्षा पूर्ण की।[9] अधिकांश विद्वानों का मानना है कि तक्षशिला में पृथक–पृथक तथा

Copyright © 2023 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

छोटे–छोटे गुरुकुल भी थे जो यहीं के आचार्य द्वारा नियन्त्रित व संचालित होते थे, कुछ गुरुकुल में विद्यार्थियों की संख्या 500 तक हो जाया करती थी।[10] ए0एस0 अल्टेकर महोदय ने जातकों में वर्णित इस संख्या को अतिशयोक्ति बताया है। इनके अनुसार एक शिक्षक के अधीन 20 से अधिक छात्र नहीं रहते थे।[11] चूंकि तक्षशिला विश्वविद्यालय तथा यहाँ के आचार्य अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चुके थे, अतः एक ख्याति प्राप्ति विशेषज्ञ आचार्य के अधीन मात्र 20 छात्र ही देश तथा विदेश से पढ़ने आते थे, ये बात तर्कसंगत प्रतीत नहीं होती। अतः यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ के शिक्षकों के अधीन 500 या उसके आस–पास विद्यार्थी अध्ययन करते थे।[12] इन गुरुकुलों में विविध प्रकार के विषय पढ़ाए जाते थे। यदि इन गुरूकुलों को महाविद्यालय कहा जाए तो गलत नहीं होगा। जातक ग्रन्थों से जानकारी प्राप्त होती है कि ईसा की प्रथम दो शताब्दियों में यह विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के केन्द्र के रूप में विख्यात था। यहाँ पर धनी तथा निर्धन दोनों प्रकार के विद्यार्थी समान रूप से शिक्षा ग्रहण करते थे। धनी विद्यार्थी शुल्क देते थे जबकि निर्धन छात्र निःशुल्क शिक्षा प्राप्त करते थे। इस विश्वविद्यालय के द्वार जन–सामान्य तथा शासक वर्ग दोनों के लिए खुले थे।[13]

जातक ग्रन्थों में ब्रह्मदत्त नामक एक राजकुमार का उल्लेख है जो कि बनारस के राजा का पुत्र था, जिसने 16 वर्ष की आयु में एक जोड़ी चप्पल तथा पत्तों का बना हुआ छाता तथा 100 मुद्रा लेकर तक्षशिला में शिक्षा के लिए प्रवेश किया तथा शिक्षण कार्य पूर्ण किया।[14] अपोलोनियस के मतानुसार यहाँ पर शिक्षा प्राप्त करने के लिए यूनान तक के विद्यार्थी आते थे। इनको हस्तिविद्या, धनुर्विद्या, पशुओं की बोली की शिक्षा दी जाती थी।[15] मिलिन्दपन्हों में नागसेन नामक एक ब्राह्मण की शिक्षा प्राप्त करने का वर्णन है, जिससे पता चलता है कि तत्कालीन भारत में हिन्दू और बौद्ध धर्म दोनों की समान प्रकार से शिक्षा दी जाती थी।[16] एक अनुमान के अनुसार लगभग 1000 वर्षों तक इस विश्वविद्यालय की प्रसिद्धि देश तथा विदेशों में फैली रही। यहाँ न सिर्फ भारत के विविध स्थानों से बल्कि विदेशों से भी विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आया करते थे। यहाँ पर वाराणसी, उज्जयिनी, राजगृह, पाटलिपुत्र, चम्पा तथा मिथिला के विद्यार्थी अध्ययन के लिए आते रहते थे।[17] 7वीं शताब्दी ई0 पूर्व में ही तक्षशिला उच्च शिक्षा के केन्द्र के रूप में विकसित हो चुका था।[18] उत्तरवैदिक काल में तक्षशिला नगर के रूप में स्थापित हो चुका था।[19] ई0 पूर्व छठी शताब्दी में बौद्ध धर्म की उत्पत्ति के बाद तक्षशिला की प्रसिद्धि में और वृद्धि हुई। यहीं पर प्रथम बार यूनानी और भारतीय दार्शनिक सम्पर्क में आए।[20] जातक ग्रन्थों से जानकारी मिलती है कि इस समय बनारस भी शिक्षा का प्रसिद्ध केन्द्र था। यहाँ अपर अनेक ऐसे अध्यापक भी थे जिन्होंने तक्षशिला में शिक्षा प्राप्त की थी।[21] यहाँ से शिक्षा प्राप्त करने वाले का देश तथा विदेश में बड़ा सम्मान किया जाता था।[22] यहाँ पर शिक्षा संस्कृत भाषा में दी जाती थी।[23] यहाँ पर मुख्य रूप से उच्च शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा का आधार परिवार प्रणाली था।[24] यहाँ पर शिक्षा का मुख्य लक्ष्य स्वांतः सुखाय था न कि किसी प्रकार की उपाधि प्राप्त करना था।[25] बौद्ध साहित्य (तेलपत जातक एवं सेतकेतु जातक) के अनुसार यहाँ पर विश्वप्रसिद्ध आचार्य निवास करते थे तथा यहाँ पर उच्च शिक्षा प्रदान की जाती थी। लगभग 16 वर्ष की आयु में विद्यार्थी को प्रवेश मिल जाता था और वे यहाँ रहकर 6 से 8 वर्ष तक अध्ययन करते थे। यहाँ पर सादा जीवन, उच्च विचार, उत्तम आचरण पर विशेष ध्यान दिया जाता था। जातक ग्रन्थों के समय यह विश्वविद्यालय अत्यन्त समृद्ध हो चुका था। इस समय तक यहाँ हिन्दू, बौद्ध धर्म से सम्बन्धित शिक्षा मिलने लगी थी। अफगानिस्तान, फ्रांस, सीरिया, यूनान तक इसकी ख्याति फैल चुकी थी। इस समय तक यह भारत की बौद्धिक राजधानी बन चुका था।[26] भारत की राष्ट्रीय लिपि ब्राह्मी यहीं से निकली तथा यहाँ के पाठ्यक्रम के 18 शिल्पों में यूनानी कला भी शामिल हुई।[27]

भौगोलिक दृष्टि से तक्षशिला उत्तरी–पश्चिमी सीमा पर स्थित था, यह झेलम, सिन्धु नदी तथा मरगला–हजारा पहाड़ी से घिरा हुआ सुरक्षित नगर था।[28] राजनीतिक व्यापारिक दृष्टि से यह विशेष महत्व का था। यहाँ पर तीन व्यापारिक मार्ग मिलते थे। इसकी भौगोलिक स्थिति, राजनीतिक तथा व्यापारिक स्थल इसे महत्वपूर्ण नगर के रूप में विकसित करने में प्रमुख भूमिका निभाई।[29] प्लिनी, प्लूटार्क, स्ट्रेबो तथा ह्वेनसांग जैसे विद्वानों ने इस नगर की प्रसिद्धि का वर्णन किया। सीमान्त प्रदेश होने के कारण अध्ययन–अध्यापन की दृष्टि से विदेशी विद्यार्थियों को भारत आने के लिए आकर्षित किया। ये विद्यार्थी अध्ययन–अध्यापन पूर्ण करने के बाद, जब पुनः अपने देश वापस लौटते तो तक्षशिला की प्रशंसा अन्य लोगों से करते। इस प्रकार अन्य लोग भी भारत आने को लालायित रहते। ए0एस0 अल्टेकर महोदय के अनुसार तक्षशिला से प्राप्त खण्डहरों से ऐसा अनुमान लगता है कि यवन, शक, कुषाण काल में पुरानी बस्तियाँ नष्ट हुई तथा नवीन बस्तियाँ स्थापित हुई। इस राजनीतिक उतार–चढ़ाव के परिणामस्वरूप नगर की समृद्धि नष्ट हुई होंगी। जिसका परिणाम यहाँ की शिक्षा–व्यवस्था पर निश्चित तौर पर पड़ा होगा। प्रायः सभी आक्रमणकारी शासकों ने तक्षशिला को अपनी प्रान्तीय राजधानी बनाई जिसके कारण यहाँ की समृद्धि शीघ्र ही स्थापित हो जाया करती थी।[30] खण्डहरों की खुदाई से ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि यह नगर कई बार बसा तथा कई बार उजड़ा भी परन्तु हर बार ये अपने–आपको पुनः स्थापित कर पाने, अपनी समृद्धि तथा शिक्षा व्यवस्था की नई ज्योति जगा पाने में सफल रहा।[31] इस नगर की समृद्धि की जड़ें इतनी गहरी थी कि लगातार विघटन के बाद भी ये नष्ट नहीं हुए यद्यपि इनमें कुछ परिवर्तन अवश्य हुए परन्तु अन्ततोगत्वा ये अपने आपको बनाए रखने में सफल रहे। छठी शताब्दी ई0 पूर्व यहाँ पर पार्सियनों का अधिपत्य बना रहा।[32] 327 ई0 पूर्व सिकन्दर ने भारत विजय की आकांक्षा से हिन्दुकुश पार करके निकाई नगर पहुँचा यहाँ पर तक्षशिला के तत्कालीन शासक आम्भी ने उसे बहुमूल्य उपहार दिया और भारत आने का निमन्त्रण दिया। 326 ई0 पूर्व में सिकन्दर तक्षशिला पहुँचा इस प्रकार तक्षशिला पर यूनानियों का प्रभाव स्थापित हुआ। द्वितीय शताब्दी ई0 पूर्व यहाँ पर इण्डो बैक्ट्रियनों का शासन रहा। कालान्तर में यहाँ पर मौर्य, शक, कुषाण शासकों का भी शासन, स्थापित हुआ।[33] लगातार विदेशी शासन के बाद भी यहाँ पर प्रजा तथा राजा के बीच सहयोग बना रहा। नवीन संस्कृति एवं विचारों ने यहाँ कि शिक्षा प्रणाली को समृद्ध ही किया। तीसरी शताब्दी तक तक्षशिला शिक्षा के क्षेत्र में अत्यधिक प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका था। वकाटक जातियों के आगमन के साथ ही इसका पतन प्रारम्भ हुआ। 7वीं शताब्दी में भारत आने वाला चीनी यात्री ह्वेनसांग ने तक्षशिला का कोई वर्णन नहीं किया।[34] संभवतः हूण आक्रमणकारियों ने 5वीं शताब्दी में इस गौरवशाली ज्ञान के केन्द्र को सदैव के लिए नष्ट कर दिया।[35]

निष्कर्ष :–

इस प्रकार कहा जा सकता है कि तक्षशिला विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के केन्द्र के रूप में वर्तमान विश्वविद्यालय के अत्यधिक निकट था। जिस प्रकार वर्तमान में उच्च शिक्षा के अन्तर्गत किसी विशिष्ट विषय के विशेषज्ञ अध्यापक द्वारा विद्यार्थी को शिक्षा देकर उसे ज्ञानवान बनाए जाने का प्रावधान है ठीक उसी प्रकार तक्षशिला में विविध विषयों के अध्ययन की समुचित व्यवस्था थी। इस विश्वविद्यालय का कुशल संचालन यही के आचार्यों द्वारा ही किया जाता था। तक्षशिला न सिर्फ भारत बल्कि सुदूर विदेशों में भी उच्च शिक्षा के केन्द्र के रूप में विख्यात हो चुका था, यहाँ पर कई विश्वविद्यालय के विद्वान आचार्य एक स्थान पर निवास करते तथा शिक्षा भी प्रदान करते थे जिनके ज्ञान, यश–कीर्ति को सुनकर दूर–दूर से विद्यार्थी शिक्षा के प्रयोजन से आते थे। यहाँ के पाठ्यक्रम में त्रयी (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद) हस्तिविद्या, धनुर्विद्या, आयुर्वेद, दर्शनशास्त्र, व्याकरण, सर्पविद्या, तंत्रशास्त्र, गणित, ज्योतिष, नृत्य संगीत, चित्रकला, वार्ता (कृषि, पशुपालन, व्यापार–वाणिज्य),

शस्त्र संचालन की शिक्षा को शामिल किया गया था।[36] किसी विद्यार्थी की शिक्षा–दीक्षा तब तक पूर्ण नहीं समझी जाती थी, जब तक वह तक्षशिला में रहकर यहाँ के विद्वान आचार्यों से ज्ञान प्राप्त कर पारंगत न बन जाए। तक्षशिला की प्रशंसा करते हुए आचार्य दीपांकर ने उचित ही लिखा है कि– ''तक्षशिला विश्वविद्यालय ऐसा प्रकाश स्तम्भ था जिसने पूरे भारत के साथ–साथ दक्षिण–पूर्वी, पश्चिमी एशिया तथा यूरोप को अपने ज्ञान रूपी प्रकाश पुंज से प्रकाशित किया।''[37]

संदर्भ सूची

1. प्रसाद, भुवनेश्वर, भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृ0 135
2. पाण्डेय, डॉ0 रामशक्ल, प्राचीन भारत के शिक्षा मनीषी, पृ0 94
3. वशिष्ठ, देवेन्द्र कुमार, भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृ0 54
4. ऐतरेय ब्राह्मण 7/34
5. शतपथ ब्राह्मण, 8/4/10
6. पाण्डेय, डॉ0 रामशक्ल, प्राचीन भारत में शिक्षा मनीषी, पृ0 95
7. वही, पृ0 94–95
8. अल्टेकर, डॉ0 ए0एस0, प्राचीन भारत में शिक्षा पद्धति, पृ0 85
9. तोमर लज्जाराम, प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, पृ0 109
10. जातक : फॉसवॉल प्रथम, पृ0 सं0 239, 317, 402, तृतीय संस्करण, पृ0 18, 235
11. अल्टेकर, डॉ0 ए0एस0, प्राचीन भारतीय शिक्षण पद्धति, पृ0 81–109
12. तोमर, लज्जाराम, प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, पृ0 110
13. जैन, डॉ0 हुकुमचन्द्र, ऐतिहासिक स्थल, पृ0 103
14. मुखर्जी, डॉ0 आर0के0, Education in Ancient India Page No. 477-78 जातक सं0 252
15. हत्थिसुत 2, 47, जातक, 2, 200, 3, 415, 3, 219
16. भुवनेश्वर प्रसाद, प्राचीन भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृ0 133
17. मिश्र, जयशंकर, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृ0 563
18. तोमर, लज्जाराम, प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, पृ0 108, दीपांकर, आचार्य, कौटिल्यकालीन भारत पृ0 43
19. मिश्र, जयशंकर, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृ0 563
20. वही, पृ0 564
21. ओम प्रकाश, प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास, पृ0 344, जातक 5, 130, 185
22. आचार्य, दीपांकर, कौटिल्य कालीन भारत, पृ0 43
23. कौशितिकी ब्राह्मण 7/6
24. गोयल, डॉ0 प्रीति प्रभा, भारतीय संस्कृति, पृ0 122
25. मिश्र, जयशंकर, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, पृ0 563
26. भुवनेश्वर प्रसाद, भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृ0 135

27. तोमर, लज्जाराम, प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, पृ0 109
28. कनिंघम, अलेक्जेण्डर, The Ancient Geog of India.
29. गुप्त नत्थूलाल, शिक्षा का सांस्कृतिक इतिहास, पृ0 123
30. अल्टेकर, डॉ0 ए0एस0 प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, पृ0 82
31. तोमर, लज्जाराम, प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति, पृ0 109
32. डोंगर केरी, एस0आर0, The University Education in India, Page 2
33. मार्शल, सर जॉन, A Guide to Taxila, Page No. 3, 16-18
34. पाण्डेय, डॉ0 रामशक्ल, प्राचीन भारत के शिक्षा मनीषी, पृ0 94–95
35. जैन, डॉ0 हुकुमचन्द, ऐतिहासिक स्थल, पृ0 103
36. वशिष्ठ, देवेन्द्र कुमार, भारतीय शिक्षा का इतिहास, पृ0 54
37. आचार्य, दीपांकर, कौटिल्य कालीन भारत, पृ0 43